



[लोगोस बाइबल अध्ययन सेवकाई]

लोगोस बाइबल प्रतियोगिता मॉड्यूल: 3

वेबसाइट: <https://logosinhindi.com/>

ईमेल: logosinhindi@gmail.com

फ़ोन: 9772420808

विषय- सूची

Chapter 1: उद्धार में परमेश्वर की सम्प्रभुता

Chapter 2: मरकुस 11:22-24 की विश्वास का वचन प्रचारकों (Word Faith Preachers) द्वारा की गई व्याख्या का खंडन

Chapter 3: प्रश्न: क्या बाइबल उद्धार के साथ शारीरिक चंगाई का वादा करती है?

Chapter 4: ग्रहण योग्य दान !

Chapter 5: Doctrine of Unconditional Election बिना शर्त चुनाव की शिक्षा/सिद्धांत:

Chapter 1: उद्धार में परमेश्वर की सम्प्रभुता



कौन स्वर्ग जायेगा और कौन नरक यह परमेश्वर ने निर्धारण कर रखा है:

और अभी तक न तो बालक जन्मे थे, और न उन्होंने कुछ भला या बुरा किया था कि उस ने कहा, कि जेठा छुटके का दास होगा।

इसलिये कि परमेश्वर की मनसा जो उसके चुन लेने के अनुसार है, कर्मों के कारण नहीं, परन्तु बुलाने वाले पर बनी रहे।

जैसा लिखा है, कि मैं ने याकूब से प्रेम किया, परन्तु एसों को अप्रिय जाना॥ (रोमियों 9:11-13)

आपने देखा कि उन जुड़वां बच्चों के पैदा होने से पहले ही, परमेश्वर ने याकूब को चुन लिया और एसाव को नहीं?

क्योंकि वह मूसा से कहता है,

“मैं जिस किसी पर दया करना चाहूँ, उसी पर दया करूँगा, और जिस किसी पर कृपा करना चाहूँ उसी पर कृपा करूँगा। इसलिए यह न तो चाहनेवाले की, न दौड़नेवाले की परन्तु दया करनेवाले परमेश्वर की बात है।” (रोमियों 9:15-16)

यहां आपने देखा कि परमेश्वर जिस किसी को भी बचाना चाहते हैं बचाते हैं और दूसरों को अस्वीकृत कर देते हैं।

वे ऐसा क्यों करते हैं?



हे मनुष्य, भला तू कौन है, जो परमेश्वर का सामना करता है? क्या गढ़ी हुई वस्तु गढ़नेवाले से कह सकती है,

“तूने मुझे ऐसा क्यों बनाया है?” क्या कुम्हार को मिट्टी पर अधिकार नहीं कि एक ही लौदे में से, एक बर्तन आदर के लिये और दूसरे को अनादर के लिये बनाए? कि परमेश्वर ने अपना क्रोध दिखाने और अपनी सामर्थ्य प्रगट करने की इच्छा से क्रोध के बरतनों की, जो विनाश के लिये तैयार किए गए थे बड़े धीरज से सही। और दया के बरतनों पर जिन्हें उस ने महिमा के लिये पहिले से तैयार किया, अपने महिमा के धन को प्रगट करने की इच्छा की. (रोमियों 9:20-23)

इन आयतों में हम पाते हैं कि परमेश्वर ने यह ब्रम्हांड और मनुष्य अपनी महिमा के लिए बनाए है (रोमियो 11:36)। वे चाहते हैं कि उनकी दया और न्याय दोनों के लिए उनकी महिमा हो। वो अपनी दया के लिए महिमा मुठ्ठी भर लोगों को (जिनको उन्होंने संसार की उत्पत्ति से पहले से ही चुन लिया था) बचाने के द्वारा लेते हैं और न्याय के लिए महिमा पापियों को उनके पाप की वजह से नरक में सजा देकर लेंगे.

क्या यह भाग्य-निर्धारण परमेश्वर को हमारे पापों के लिए जिम्मेदार नहीं बना देता?

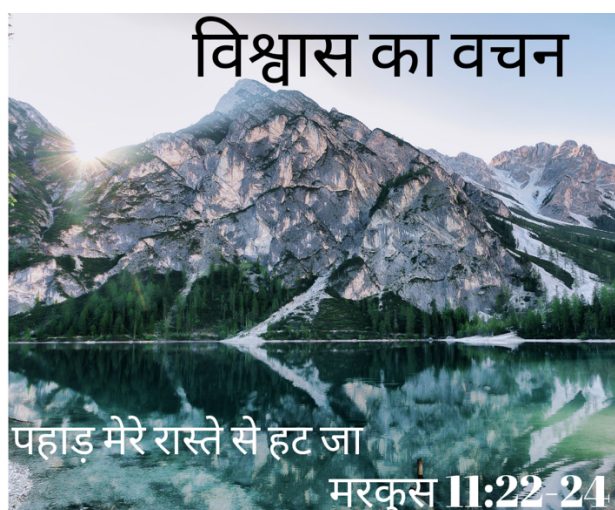


नहीं, बिल्कुल नहीं! परमेश्वर पवित्र पवित्र पवित्र हैं (यशायाह 6:3). वे ज्योति हैं, उनमें कुछ भी अंधकार नहीं (1 यूहन्ना 1:5). पाप करना परमेश्वर के लिए असंभव है. परमेश्वर की पाप न करने की असीम अयोग्यता ही उन्हें झूठे ईश्वरों से पृथक करती है। परमेश्वर ना ही प्रत्यक्ष और ना ही अप्रत्यक्ष रूप से पाप के लिए जिम्मेदार है (याकूब 1:13)। अगर आपको परमेश्वर की पवित्रता पर जरा भी संदेह है तो क्रूस पर निगाह डालिए। वे धार्मिकता से इतना प्रेम करते हैं कि उन्होंने अपने कुछ चुने हुएों को न्याय (नरक) से बचाने के लिए अपने इकलौते पुत्र को ही नरक पिला दिया अर्थात चुने हुएों के बजाय की सजा दे दी।

उपसंहार:

परमेश्वर के चुने हुए उनसे दया और अनुग्रह पाते हैं, लेकिन पापी अपने पापों की वजह से न्याय (नरक) पाते हैं। किसी के साथ अन्याय नहीं होता है।

Chapter 2: मरकुस 11:22-24 की विश्वास का वचन प्रचारकों (Word Faith Preachers) द्वारा की गई व्याख्या का खंडन



यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, “परमेश्वर में विश्वास रखो। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ यदि कोई इस पहाड़ से यह कहे, ‘तू उखड़ कर समुद्र में जा गिर’ और उसके मन में किसी तरह का कोई संदेह न हो बल्कि विश्वास हो कि जैसा उसने कहा है, वैसा ही हो जायेगा तो उसके लिये वैसा ही होगा। इसीलिये मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुम प्रार्थना में जो कुछ माँगोगे, विश्वास करो वह तुम्हें मिल गया है, वह तुम्हारा हो गया है। (मरकुस 11:22-24)

मरकुस 11 की चौदहवीं आयत में हम देखते हैं कि यीशु मसीह एक अंजीर के पेड़ पर शाप के शब्द बोलते हैं और बीसवीं आयत में वो पेड़ पतरस के द्वारा सूखा पाया जाता है। यीशु मसीह के शब्दों में जीवन और मृत्यु की सामर्थ्य है। वो जो बोलता है वो हो जाता है।

आयत 22:

यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, “परमेश्वर में विश्वास रखो।



पतरस ने जब सूखे पेड़ को देख कर आश्चर्य जताया तो यीशु मसीह उसे और बाकी चेलों को कहता है, “परमेश्वर में विश्वास करो।” ध्यान दीजिए हमे परमेश्वर पर विश्वास करना है अपने शब्दों या प्रार्थनाओं पर नहीं। बाइबिल हमे कहीं भी प्रार्थनाओं और शब्दों पर विश्वास रखने के लिए नहीं कहती। बाइबिल हमे परमेश्वर और प्रार्थना के विषय में दिए उसके वादों पर विश्वास करने को कहती है। परमेश्वर ने अपनी अनंत बुद्धी में अपनी सम्प्रभु योजनाओं (sovereign plans) को प्रार्थना के द्वारा क्रियान्वित करना चुना है।

ऐसा नहीं है कि हमारे प्रार्थना करने से वो क्रियान्वित (activate) हो जाता है या उसको करना पड़ता है। वो प्रार्थना के द्वारा काम करता है क्योंकि वो करना चाहता है और उसी ने इस तरह से काम करने का निर्णय किया है। वैसे भी प्रार्थना की परिभाषा होती है कुछ मांगना – मालिक चाहे तो दे दे और ना चाहे तो मना कर दे। आपने-मैंने कोई कर्जा थोड़े दे रखा है परमेश्वर को जिसके बदले में उसे काम करना ही पड़ेगा (रोमियों 11:35)। ध्यान रखें प्रार्थना मांगना है, आज्ञा देना या अधिकार जताना नहीं।

आयत 23:

मैं तुमसे सत्य कहता हूँ: यदि कोई इस पहाड़ से यह कहे, ‘तू उखड़ कर समुद्र में जा गिर’ और उसके मन में किसी तरह का कोई संदेह न हो बल्कि विश्वास हो कि जैसा उसने कहा है, वैसा ही हो जायेगा तो उसके लिये वैसा ही होगा।



यीशु मसीह यहां अक्षरक्षः (literally) बात नहीं कर रहे हैं। वो अलंकारिक भाषा का प्रयोग कर रहे हैं, वैसे ही जैसे यूहन्ना 6:53 में उन्होंने कहा था कि मेरा मांस खाये बिना कोई जीवन नहीं पा सकता। क्या वो वास्तव में अपना मांस खाने की बात कर रहे थे, जैसा कि कैथोलिक लोग कहते हैं? नहीं ना?

वहां हमने सन्दर्भ के हिसाब से अर्थ निकाला कि जो कोई यीशु मसीह की मृत्यु पर विश्वास नहीं करता वो जीवन नहीं पा सकता। **जकर्याह 4:7** में ज़रुब्बाबेल ने जब कहा कि ये पहाड़ टल जाएगा तो उसका मतलब अक्षरक्षः पहाड़ नहीं था, बल्कि उनके सामने आने वाली चुनौती थी। इसी तरह से यीशु मसीह ने कहा कि हम भी परमेश्वर पर यदि विश्वास करें तो परमेश्वर की महिमा के और हमारे पवित्रीकरण के मार्ग में आने वाली हर बाधा और चुनौती पर हम विजय पाएंगे।

आयत 24:

इसीलिये मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुम प्रार्थना में जो कुछ माँगोगे, विश्वास करो वह तुम्हें मिल गया है, वह तुम्हारा हो गया है। (मरकुस 11:22-24)

- बहुत से लोग ऐसे कहते हैं कि हम कुछ भी मांगेंगे हमें मिलेगा। यीशु मसीह को कोई मंशापूर्ण देवता या अपना कोई नौकर है क्या? वो आसमान में, धरती पर, समुद्र में और गहरे समुद्र में वही करता जो वो चाहता है (**भजन सहिता 135:6**)। वो सबकुछ अपनी ही इच्छा की मंत्रणा के हिसाब से करता है (**इफिसियों 1:11 ब**)।
- यहाँ जो कुछ का मतलब सबकुछ नहीं है। मान लीजिए आप किसी रेस्टोरेंट में खाना खाने गए और आप ने अपने मित्र से बोला जो कुछ तुम चाहो मंगा लो। जो कुछ का मतलब यहां सब कुछ नहीं है। जो कुछ का मतलब मेन्यू में जो है उसमें से कुछ भी है। जो मेन्यू में है उसके बाहर आपका मित्र कुछ भी नहीं मंगवा सकता। इसी तरह से परमेश्वर ने भी निम्नांकित आयतों में आपके मांगने और उसके देने पर सीमाएं बांध दी हैं:

तुम मांगते हो और पाते नहीं, इसलिये कि बुरी इच्छा से मांगते हो, ताकि अपने भोग विलास में उड़ा दो। (याकूब 4:3)



यदि हम कोइ सी भी चीज़ परमेश्वर की महिमा के अलावा किसी और उद्देश्य से मांगे तो वो हमें नहीं मिलेगी। भौतिक वस्तुएं तो दूर की बात हैं यदि हम परमेश्वर की महिमा के अलावा किसी और उद्देश्य से पापों पर विजय या पवित्रता भी मांगे तो नहीं मिलेगी। परमेश्वर जो भी करता है वो अपनी महिमा के लिए करता है।

और हमें उसके सामने जो हियाव होता है, वह यह है; कि यदि हम उस की इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो हमारी सुनता है।

और जब हम जानते हैं, कि जो कुछ हम मांगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं, कि जो कुछ हम ने उस से मांगा, वह पाया है। (1 यूहन्ना 5:14-15)

1 यूहन्ना 5:15 में भी मरकुस **11:24** आयत के जैसी ही भाषा है कि जो कुछ हमने मांगा है वो पाया भी है, परन्तु आयत 14 हमारे मांगने ओर उसके देने को सीमित कर देता है। वहां लिखा है कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार माँगे तो वो हमें देता है, अन्यथा नहीं। तो हमारा विश्वास क्या होना चाहिए कि हम जो कुछ मांगेंगे वो हमें मिलेगा? नहीं। कदापी नहीं। हमारा विश्वास यह होना चाहिए: **हमे उसके सामने हियाव (confidence) है कि जो हम उसकी इच्छा से मांगेंगे वो हमें मिलेगा। (1 यूहन्ना 5:14)**

यीशु मसीह ने हमें उसके नाम से प्रार्थना करने को कहा है। यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करने का मतलब ये है:

- परमेश्वर के चरित्र के अनुसार मांगना। परमेश्वर हमें अपने चरित्र के विपरीत जाकर हमारी स्वार्थी और विनाशकारी इच्छाओं को पूरा नहीं करेगा।
- यीशु मसीह के क्रूस पर किये काम के आधार पर माँगना। हम लोग पापी हैं और परमेश्वर से नरक के अलावा और कुछ भी पाने के योग्य नहीं हैं। तो जो कुछ भी मिलेगा वो इसलिए क्योंकि यीशु मसीह क्रूस पर हमारे भाग का नरक पी गया।
- परमेश्वर की इच्छा के अनुसार।

जी हाँ, जब भी हम “यीशु मसीह के नाम से” कहकर प्रार्थना खत्म करते हैं तो हमारा यह मतलब होता है: आपके चरित्र के अनुसार, यीशु मसीह के क्रूस पर किये काम के आधार पर और यदि आप की इच्छा है तो।

निष्कर्ष:

- आयत 22 के अनुसार हमारा विश्वास खुद पर या खुद के शब्दों में नहीं परमेश्वर पर होना चाहिए।
- आयत 23 में कहीं भी नहीं लिखा कि हमें अपनी समस्याओं, बाधाओं या चुनौतियों से बातें करनी या आज्ञा देनी है। वहां दिए गए शब्द (यदि तुम इस पहाड़ से कहो) अक्षरक्षः नहीं परन्तु आलंकारिक हैं।
- आयत 24 में यीशु मसीह प्रार्थना की बात कर रहा है, अर्थात हमें परमेश्वर से बातें करनी है ना कि चुनौतियों से।

तीनों आयतों में परमेश्वर ने हमसे कहीं भी नहीं कहा है कि जो हम कहेंगे या आज्ञा देंगे वो हो जायेगा। तीनों आयतों का किसी भी प्रकार से यह अर्थ नहीं निकाला जा सकता कि हमारे शब्दों में परमेश्वर के समान सृजनात्मक सामर्थ (creative power) होती है और हम अपने सकारात्मक अंगीकार के द्वारा चंगाई, अमीरी आदि अस्तित्व में ला सकते हैं या अपना भाग्य बदल सकते हैं। ऐसा सोचना

उद्धंडता, ऐसा बोलना परमेश्वर की निंदा (blasphemy) और ऐसा सीखाना बाइबिल में जोड़ना है जिसके विषय में चेतावनी दी गई है की जो कोई इसमें जोड़ेगा उसकी सजा बड़ा दी जाएगी.
(प्रकाशितवाक्य 22:18)

Chapter 3: प्रश्न: क्या बाइबल उद्धार के साथ शारीरिक चंगाई का वादा करती है?



उत्तर: “यीशु मसीह ने आपकी बीमारियां उठा ली हैं और शारीरिक चंगाई आप का अधिकार है। बाइबल की चंगाई से सम्बंधित आयतों को लेके उनकी अपने ऊपर घोषणा कीजिये, बिमारियों को डाटिये और अपनी चंगाई को अधिकारपूर्वक ले लीजिये। “

आपने बहुत से प्रचारकों से ऐसी उद्घोषणाएं सुनी होंगी और बहुत सी किताबों या पत्रिकाओं में पढ़ी होगी। आप में से कुछ ने इसको ट्राई भी किया होगा, लेकिन आपका कैंसर, डायबिटीज, लकवा अभी भी वही का वही हैं और आप सोंचते होंगे की यदि परमेश्वर ने वादा किया है और मैं पूरा विश्वास भी रखता हूँ और अकेले में ही नहीं लोगों के सामने भी घोषणा करता हूँ तो फिर मैं चंगा क्यों नहीं हो रहा हूँ? क्या परमेश्वर ने वास्तव में शारीरिक चंगाई का वादा किया है? आइये हम इस प्रश्न का उत्तर साथ में बाइबल में ढूँढते हैं क्योंकि **रोमियों 3:4** में लिखा है की *सब मनुष्य झूठे ठहरे और सिर्फ परमेश्वर सच्चा ठहरे*। कोई प्रचारक हमे क्या कहते हैं ये हमारा आधार नहीं है। हमारा आधार है बाइबल-परमेश्वर के मुँह से निकले शब्द।

शारीरिक चंगाई का प्रचार करने वाले लोग सबसे ज्यादा निम्नांकित आयत को उद्धृत करते हैं:

“परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जाएं।”
(यशायाह 53:5)

अगर हम यंहा सन्दर्भ देखे तो यीशु मसीह हमारे पापों के कारण घायल किया गया, हमारे अधर्म के कामों के लिए कुचला गया। यहाँ सन्दर्भ शारीरिक चंगाई का नहीं है . यहाँ सन्दर्भ है आत्मिक चंगाई का। हमारी कौनसी शांति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी? आत्मिक शान्ति। हम पाप के कारण परमेश्वर के दुश्मन थे लेकिन यीशु मसीह के बलिदान के द्वारा उसके और हमारे बीच में शांति स्थापित हो गई। अब वो हमारा दुश्मन नहीं पर पिता और मित्र और रक्षक बन गया है। अगर कोड़ों के द्वारा चंगाई की भी बात करें तो ये भी आत्मिक चंगाई ही है। पहली ध्यान देने वाली बात तो ये है की इब्रानी भाषा में कोड़ों के लिए दिया शब्द 'चाबुरा (chaburah)' बहुवचन नहीं पर एक वचन है।

आपको क्या लगता है इंसानों के द्वारा मारे गए कोड़ों के द्वारा आपका उद्धार हुआ है? नहीं? आपने मनुष्यों की व्यवस्था थोड़े ही तोड़ी है जो मनुष्यों के कोड़ों से आपका उद्धार हो जाये। आपके पाप अंततः परमेश्वर के खिलाफ है (भजन संहिता 51:4), इसलिए परमेश्वर ही यीशु मसीह को दंड दे तो आप का उद्धार हो सकता है (यशायाह 53:10-11)। ये एक कोड़ा यहाँ परमेश्वर के द्वारा यीशु मसीह को मारे गए एक कोड़े को इंगित कर रहा है। परमेश्वर ने यीशु मसीह को एक कोड़ा मारा और उसके द्वारा हम चंगे हो गए – इसका मतलब यह है की परमेश्वर का हमारे पापों पर जो क्रोध था वो यीशु मसीह पे उंडेल दिया और हम उसके द्वारा आत्मिक रूप से चंगे हो जाये अर्थात उद्धार पा जाएँ।

पतरस स्वयं यशायाह 53:5 की व्याख्या आत्मिक चंगाई के रूप में करता है:

” वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया जिस से हम पापों के लिये मर कर के धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं: उसी के कोड़े खाने से तुम चंगे हुए। ” (1 पतरस 2:24)

इस वचन के हिसाब से क्रूस पर क्या चढ़ाया गया? हमारे पाप। पतरस कोड़ों या एक कोड़े के द्वारा यहाँ किस चंगाई की बात कर रहा है? आत्मिक चंगाई , जी हाँ पापों से आत्मिक चंगाई।

परन्तु मती निम्न आयतों में यशायाह 53:4-5 की और संकेत करते हुए कहता है की यीशु मसीह शारीरिक रूप से चंगाई करने के लिए भी मरा था।

“जब संध्या हुई तब वे उसके पास बहुत से लोगों को लाए जिन में दुष्टात्माएं थीं और उस ने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया, और सब बीमारों को चंगा किया।

ताकि जो वचन यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो, कि उस ने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया।” (मती 8: 16-17)

क्या यह सत्य है? हाँ. यह भी पूरी तरह सत्य है। पतरस यशायाह की भविष्यवाणी की व्याख्या आत्मिक चंगाई के रूप में करता है और मती शारीरिक. क्या ये एक दूसरे के विरोध में हैं? नहीं, बिल्कुल भी नहीं। पतरस मूल (पाप) के नाश होने की बात कर रहा है और मती मूल के परिणाम (बीमारी) के नाश होने की बात कर रहा है। आइये में आपको समझाता हूँ। मनुष्य जाति में बीमारियां कैसे आई? पाप के कारण। यदि पाप (मूल) का नाश हो जायेगा तो बिमारियों (परिणाम) का नाश हो जायेगा क्या? हाँ, बिल्कुल। फिर हो क्यों नहीं रहा ?क्यों हम उद्धार पाने के बाद भी बीमारियां सह रहे हैं? क्योंकि परमेश्वर ने अभी सिर्फ हमारे आत्माओं का उद्धार किया है , हमारे शरीरों का नहीं, हमारे शरीर आज भी भ्रष्ट हैं। जब यीशु मसीह आएगा और हमे महिमावान शरीर मिलेंगे तो हमे सब

बिमारियों से चंगाई मिल जाएगी । जो प्रचारक आप से कहते हैं की यीशु मसीह ने आप की बीमारियां उठा ली । इसलिए आपको शत प्रतिशत चंगा होने का अधिकार है ।

वे झूठे शिक्षक हैं. यीशु मसीह ने आप के पाप उठाये, लेकिन वो कभी आप से ये नहीं कहेंगे की अब आप पाप नहीं कर सकते । यीशु मसीह ने क्रूस पर मृत्यु पर विजय पाई, लेकिन वो कभी आप से यह नहीं कहेंगे की आप अब मर नहीं सकते, पृथ्वी पर ही अमर हो गए हैं । यीशु मसीह ने क्रूस पर सारे शापों को तोड़ दिया, लेकिन वो सामान्यतया आपको ये नहीं कहेंगे की आपकी पत्नी को गर्भ की पीड़ा नहीं होनी चाहिए । वे सिर्फ ये कहते हैं की यीशु मसीह ने आपकी बिमारियों को उठा लिया है, इसलिए आप का शत प्रतिशत चंगाई पर अधिकार है । वो आपको चंगाई का लालच देके आप से खूब पैसा निकलवा लेते हैं दान और दशमांश के नाम पर. यीशु मसीह ने हमारे पाप उठाये लेकिन फिर भी हम पाप में गिरते हैं, क्यों? क्योंकि हमारे आत्माओं का उद्धार हुआ है, शरीरों का नहीं । अभी हमे पाप की गुलामी से आज़ादी मिली है, पाप की उपस्थिति से नहीं । जब हम महिमावान शरीर पाएंगे तो पाप की उपस्थिति भी खत्म हो जाएगी. पाप का सर्वनाश हो जायेगा । निम्न आयतों में देखिये पौलुस इंतज़ार कर रहा है यीशु मसीह के आगमन का और महिमावान शरीर पाने का , ताकि वो पाप की उपस्थिति से हमेशा के लिए बाहर आ जाये:

"क्योंकि मैं भीतरी मनुष्यत्व से तो परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न रहता हूँ। परन्तु मुझे अपने अंगों में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है, और मुझे पाप की व्यवस्था के बन्धन में डालती है जो मेरे अंगों में है। मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा? मैं अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ:"
(रोमियों 7: 22-25)

इसी तरह से , यीशु मसीह ने पाप उठा लिए तो हमें उसके परिणामों अर्थात बिमारियों, पीड़ाओं और मृत्यु में से होके क्यों जाना पड़ता है? क्योंकि हमारे शरीरों का उद्धार नहीं हुआ। निम्न आयतों में देखिये पौलुस हमे आशा दिला रहा है की शरीरों का उद्धार होने पर हम सब बिमारियों, पीड़ाओं , समस्याओं से छुटकारा पा जायेंगे:

"क्योंकि मैं समझता हूँ, कि इस समय के दुःख और क्लेश उस महिमा के साम्हने, जो हम पर प्रगट होने वाली है, कुछ भी नहीं हैं। क्योंकि सृष्टि बड़ी आशाभरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की बाट जोह रही है। क्योंकि सृष्टि अपनी इच्छा से नहीं पर आधीन करने वाले की ओर से व्यर्थता के आधीन इस आशा से की गई। कि सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी। क्योंकि हम जानते हैं, कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है।"

और केवल वही नहीं पर हम भी जिन के पास आत्मा का पहिला फल है, आप ही अपने में कराहते हैं, और लेपालक होने की, अर्थात् अपनी देह के छुटकारे की बात जोहते हैं।”

(रोमियों 8: 18-23)

निम्न आयतों में यूहन्ना हमे बता रहा हैं की जब हम स्वर्ग में जायेंगे, तो हमारी सारी पीड़ाएँ खतम हो जाएँगी और हमारे सारे आंसू पांच दिए जायेंगे:

“और वह उन की आंखोंसे सब आंसू पोंछ डालेगा; और इस के बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं।”

(प्रकाशितवाक्य 21:4)

“और नदी के इस पार; और उस पार, जीवन का पेड़ था: उस में बारह प्रकार के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता था; और उस पेड़ के पत्तों से जाति जाति के लोग चंगे होते थे।

और फिर श्राप न होगा और परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन उस नगर में होगा, और उसके दास उस की सेवा करेंगे।

और उसका मुंह देखेंगे, और उसका नाम उन के माथों पर लिखा हुआ होगा।”

(प्रकाशितवाक्या 22:2-4)

जब ये ऐसा हैं तो क्यों कुछ शिखक झूठी बातें बोलते हैं? पैसा कमाने के लिए । उन्होंने मसीहयत को कमाई का रास्ता बना लिया हैं (1 **तिमुथियस 6:5**). वो बाइबिल की आयतों का सन्दर्भ के बाहर गलत मतलब निकाल कर आप को भरमाते हैं. पतरस भी ऐसे लोगों के बारे में बताता हैं:

“वैसे ही उस ने (पौलुस ने) अपनी सब पत्रियों में भी इन बातों की चर्चा की है जिन में कितनी बातें ऐसी हैं, जिनका समझना कठिन है, और अज्ञानी और चंचल लोग (झूठे शिक्षक) उन के गलत अर्थ देते हैं जैसा की वो सरल बातों के साथ भी करते हैं और अपने ही नाश का कारण बनाते हैं।”

(2 पतरस 3:6)

तो क्या हमे हमारी बिमारियों के विषय में कुछ भी नहीं करना चाहिए? चाहिए, एक बहुत ही महत्वपूर्ण काम करना चाहिए- प्राथना । आपको चंगाई क्लेम नहीं करनी हैं । आपको बिमारी को आज्ञा नहीं देनी चाहिए । उसकी घोषणा नहीं करनी चाहिए; वो तो परमेश्वर के आगे उदंडता होगी । आपको सिर्फ प्रार्थना करनी चाहिए क्योंकि धर्मी की प्रार्थना से बहुत कुछ हो सकता हैं (**याकूब 5:16-17**)। और हाँ यदि परमेश्वर की मर्जी हुई तो आपकी प्रार्थना का उत्तर हाँ में होगा (**1 यूहन्ना 5:14**) । यदि परमेश्वर आपकी चंगाई की प्रार्थना का उत्तर नहीं देता हैं तो चिंता मत कीजिये , वो आपको आपकी बीमारी के जरिये अपने और नज़दीक ले जा रहा हैं, या आप को आत्मिक अनुशासन सीखा रहा हैं (**1 कुरिन्थियों 11:30-32, इब्रानियों 12:7-8**) या आप की बिमारी के द्वारा आप से महिमा लेना चाहता हैं । परमेश्वर ने चाहा तो, मैं फिर कभी किसी और लेख में बीमारियों के पीछे परमेश्वर के उद्देश्य के बारे में और भी विस्तार में प्रकाश डालूंगा ।

Chapter 4: ग्रहण योग्य दान !



जब भी कोई धनी व्यक्ति गरीबों की मदद करने के लिए किसी संस्था का निर्माण करता है तो समाज के लोग जरूर उस पर ध्यान देते हैं और ऐसा व्यक्ति अपने दयावान होने और जरूरतमंदों को देने की वजह से बहुत प्रशंसा पाता है। और ज्यादातर लोग ये ही दिखाना चाहते हैं कि वो कितने खुले दिल वाले और दयावान है। संसार के लोग संसार से प्रशंसा पाने में लगे रहते हैं पर क्या परमेश्वर के लोग भी ऐसा ही करते हैं?

बाइबल बताती है कि सच्चे विश्वासी को जरूरतमंद की सहायता करने के अवसर की खोज में लगा रहना चाहिए (गलतियों 2:10; याकूब 1:27; लूका 19:8।)

लेकिन साथ साथ बाइबल ये भी बताती है:

सावधान रहो! तुम मनुष्यों को दिखाने के लिये अपने धार्मिकता के काम न करो, नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ भी फल न पाओगे।

(मत्ती 6:1)

जिन यहूदियों का दान देना, प्रार्थना और उपवास करने का उद्देश्य परमेश्वर को महिमा देने के बजाय मनुष्यों से महिमा पाना था उनको बाइबल में फरिसी बताया गया है। हर कोई जो परमेश्वर का विचार ना करके कुछ भी काम करता है वो बाइबल के अनुसार एक फरिसी है, अंदर से कुछ और और बाहर से कुछ और बाइबल इसे पाप बताती है।

हम जानते हैं कि सब कुछ परमेश्वर के लिए है और उन्हीं की महिमा के लिए सब कुछ बनाया गया है। (रोमियों 11:36, क्लूसियों 1:16) और कुछ भी जो विश्वास से और परमेश्वर की महिमा के लिए नहीं वो पाप है (रोमियों 14:23 b) और परमेश्वर के आगे ग्रहण योग्य नहीं है बल्कि घिनौना और गंदा है। (यशायाह 64:6) क्योंकि एक पापी मनुष्य दूसरे पापी मनुष्यों को दिखाकर खुद महिमा पाने के लिए करता है, या फिर खुद को दूसरे से बेहतर दिखाने के लिए, या फिर अपने काम से या पैसों से परमेश्वर के न्याय को खरीदने के लिए, या फिर अपने हृदय की दुष्टता को अपने कामों से शांत करने के लिए करता है। (यिर्मिया 17:9)

हमारा कोई भी काम अगर परमेश्वर के बताए हुए तरीके के खिलाफ है तो फिर वो परमेश्वर की महिमा का कारण कैसे हो सकता है और पिता की तरफ से हमारे लिए प्रतिफल कैसे ला सकता है? बल्कि हमारा तो हर एक काम उनकी महिमा के लिए ही होना चाहिए। (1 कुरुथियों 10:31, क्लूसियों 3:17, 23-24)

“इसलिए जब तू दान करे, तो अपना ढिंढोरा न पिटवा, जैसे कपटी*, आराधनालयों और गलियों में करते हैं, ताकि लोग उनकी बड़ाई करें, मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वे अपना प्रतिफल पा चुके। परन्तु जब तू दान करे, तो जो तेरा दाहिना हाथ करता है, उसे तेरा बायाँ हाथ न जानने पाए।

(मत्ती 6:2-3)

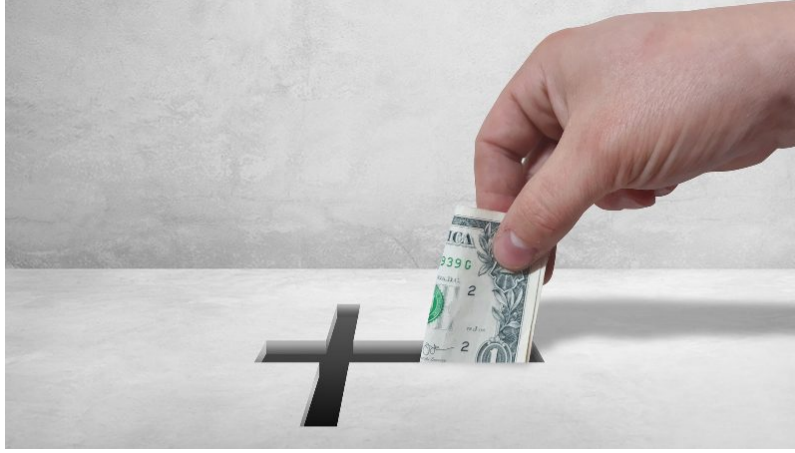
ज्यादातर धर्म के काम करने वालों में ये दो प्रकार के विचार चलते हैं- खुद की महिमा के लिए या पिता की महिमा के लिए। और इनमें से कौनसा उन पर प्रबल है ये ही उनके काम करने के उद्देश्य को निर्धारित करता है। अगर हम अपने आप को वचन से जांचे तो हम समझ पाएंगे कि हमारी अवस्था क्या है। जो परमेश्वर की महिमा के लिए कोई काम करना चाहते हैं उसे दूसरों से प्रशंसा पाने के बारे में विचार भी नहीं करना चाहिए। ना ही अपने भले कामों का ब्योरा रखना चाहिए।

करो और भूल जाओ, सोचना भी क्यों है? याद रखना भी क्यों है? खुद के कामों को सराहने के लिए? तो फिर क्या खुद के लिए ही कर रहे हो या फिर परमेश्वर के लिए? मसीह कहते हैं कि हमें इस विचार के अलावा और किसी विचार को जगह ही नहीं देनी चाहिए कि हम पिता की सेवा अपने सम्पूर्ण अस्तित्व से कर पाएं। (मत्ति 22:37) और जब हम सीखते ही परमेश्वर से हैं और उन्हीं से सामर्थ्य पाते हैं और फिर उन्हीं से ही अवसर पाते हैं तो इसमें हम अपनी बड़ाई कैसे कर सकते हैं। (लूका 17:10)

हमें तो अपना भरसक प्रयास करना चाहिए कि कोई भी मनुष्य जान ही ना पाए

आइए थोड़ा और जांचे !

- कलिसिया में दान



तुम्हारा दान गुप्त रहे, मतलब सिर्फ तुम और तुम्हारे पिता के बीच ही रहे।

अगर हम खुद से पूछें

क्या आज हमारे दान देने या लेने का तरीका सही है?

क्या आज भी देते समय दिखाना या बताना सही है ?

क्या हम इसलिए अपना हाथ देने के लिए बढ़ाते हैं कि अगर नहीं दान दिया तो पास वाला क्या सोचेगा ?

क्या हम भी फरिसीयों की तरह नहीं कर रहे?

क्या पासवान भी अभी भी दशमांश की ही शिक्षा देते हैं और वचन का ज्ञान ना रखने वालों को धोखे में रखते हैं?

क्या हम लिफाफे पर अपना नाम लिख कर इसलिए देते हैं कि पासवान, अगुवों को पता चले कि हम कितना दे रहे हैं?

और अगर ऐसा है तो न केवल हम आज्ञा का उल्लंघन कर रहे हैं बल्कि बहुतों के लिए ठोकर का कारण भी बनते हैं और बहुत से सेवक आपकी वजह से पक्षपात के पाप में लिप्त हो जाते हैं और ऐसे लोगो को खुश करने में लगे रहते हैं जो ज्यादा या लगातार देते हैं।

क्या पासवान जिस से ज्यादा आशा है उसी से ज्यादा हमदर्दी और बाकियों को तुच्छ जानने के पाप में तो नहीं जी रहे कहीं?

(याकूब 2:1-12)

इसका मतलब ये नहीं कि हमें दान देना नहीं चाहिए पर बाइबल तो बताती है कि हमें बढ़ चढ़ के देना है और मदद के लिए अपना हाथ बढ़ाना है।(2 कुरुंथियों 8:7, 2 कुरुंथियों 9) पर जैसा कि ऊपर आपने पढ़ा कि परमेश्वर के वचन के खिलाफ देना ना केवल प्रतिफल खोना है परंतु अवज्ञाकारिता एवं पाप है।

इसलिए जब भी हम दान देते हैं तो हमें इसी से ही संतुष्टि मिलनी चाहिए कि *सिर्फ पिता को ही पता है कि मैंने कितना, किन परिस्थितियों में, किस मन से और अपनी कितनी घटी में से दिया है* (मरकुस 12:41-44)

- क्या दशमांश देना भी परमेश्वर की आज्ञा है?
और अगर कोई नहीं दे रहा है तो क्या वो परमेश्वर के वचन की अवज्ञा कर रहा है?



बाइबल में पुराने नियम में इज़राइलियों को व्यवस्था के हिसाब से अपनी फसल का 10 % और जो भी उनके पशु और संसाधन थे उनमें से भी देना अनिवार्य था (लेव्यवस्था 27:30 गिनती 18:26, व्यवस्थाविवरण 14:24, 2 इतिहास 31:5) इस प्रकार कुल 23.3 % उन्हें देना होता था।

परन्तु जब येशु मसीही ने अपने पवित्र निष्पाप जीवन, और पिता की सभी आज्ञा और सारी व्यवस्था के पूर्ण करने के द्वारा (निर्गमन 20:3-17, मती 22:38-39) और व्यवस्था के अनुसार अपने प्राण देकर और वापस जी उठकर सब कुछ पूरा कर दिया तो अब कोई व्यवस्था के अधीन नहीं रहा। (गलतियों 3:22-25)

अब जब येशु ने सब कुछ नया कर दिया तो अब दशमांश की व्यवस्था भी नहीं है। और नया नियम में कहीं भी दशमांश देने के बारे में नहीं लिखा है। जबकि कुछ कलीसियाएं अभी भी दशमांश देने पर जोर देती हैं।

यह परमेश्वर के वचन के खिलाफ है ।

नया नियम हमें दान देने के महत्व और लाभ के बारे में जरूर बताता है, हमारी जितनी काबिलियत है उतना हमें देना चाहिए चाहे 10% से ज्यादा दो या फिर उस से कम दो। ये सब विश्वासी की क्षमता और मसीह की देह की आवश्यकताओं के हिसाब से ही होना चाहिए पर हर विश्वासी प्रार्थना के साथ और सही मन और परमेश्वर की महिमा के लिए दे। जब तुम कुड़ कुड़ा कर और दबाव में दे रहे हो तो फिर मन से देना और परमेश्वर को प्रसन्न करना कहां रहा? (2 कुरुंथियों 9:7)।

इसलिए जब भी दान दो तो इस भ्रम में भी मत दो कि तुम्हारे देने से तुमसे पिता ज्यादा प्रेम करेंगे या नहीं दोगे तो कम, हम सिर्फ और सिर्फ मसीह के द्वारा ही धर्मी हैं न कि हमारे कामों के द्वारा (1 कुरुंथियों 1:30-31) और परमेश्वर जो दयावान है एवं दुष्ट और धर्मी दोनों पर वर्षा करते हैं और किसी का पक्षपात नहीं करते (कुलूसियों 3:25) हमें प्रतिफल जरूर देते हैं। ऐसे नहीं देते जैसे किसी सेवक ने कुछ काम कर के कमाया हो पर एक पिता की तरह अपने उस पुत्र को जो उनकी सेवा करता है अपनी इच्छा के अनुसार देते हैं।

हमें परमेश्वर के प्रति धन्यवादी और आभारी रहना है और ना ही इसलिए देना हैं कि हमने दिया है तो

हमें अब और मिले, बल्कि यह नहीं भूलना है कि जो कुछ भी हमें मिला है उसके हमें बिल्कुल लायक नहीं। (भजन 116:12)

बाइबल हमें गरीबों, विधवाओं की सुधि लेने के लिए भी कहती है (नीति वचन 14:31, 19:17, मती 25:40)



पर ध्यान रहे।

मेरा उद्देश्य निरुत्साहित करना नहीं है पर बस यह है कि हमें खुद को सिर्फ और सिर्फ वचन के आधार पर जानें और पिता के लिए उनके वचन के आधार पर जियें ।

कुछ लोग अपने धार्मिक कामों को सबको दिखाने में लगे रहते हैं और सोशियल मिडिया के द्वारा भी दिखाते हैं।

ऐसा करने से पहले अपने आप से ये पूछना जरूरी है कि मेरे what's app अथवा Facebook आदि पर स्टेटस लगाने का उद्देश्य क्या है?

क्या यह है कि लोग जानें कि हम कितने दयावान हैं?

या फिर अपने असलियत को छिपाने के लिए मात्र एक दिखावा है?

क्या परमेश्वर आपके असली स्टेटस को नहीं जानते?

और क्या उन्हें नहीं पता कि आपकी मनसा क्या है?

अगर कोई विश्वासी इस प्रकार कर रहा है और उसे तारीफ मिल रही है तो उसे देखने वाले लोग भी प्रलोभन में आ जाते हैं और लोगों से प्रसन्नता पाने के लिए वैसा ही करने लग जाते हैं या फिर कोई मसीही कहलाने वाला भी इस प्रकार दिखा कर काम कर रहा है और लोग उसे बढ़ावा दे रहे हैं इसलिए मुझे भी करना चाहिए।

नहीं!

अच्छा है कि हम लोगों को परमेश्वर के लिए जीने और काम करने के लिए प्रोत्साहित करें एवं उन्हें सराहे पर साथ ही साथ मसीह में भाई होने के नाते उन्हें समय समय पर चेतावनी भी कि वे सावधान भी रहें कहीं शैतान उन्हें परमेश्वर की महिमा चुराने के लिए प्रलोभन में ना फसा ले। (2 तिमोथी 4:10, 2:15, 25-26, प्रेरित 12:21-23)

ताकि तेरा दान गुप्त रहे; और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।
(मत्ती 6:4)



जब भी जरूरतमंदों को दो तो पहले अपने आप को भी जांचो और अपने आप से आसान सा सवाल पूछो

“क्यों?”

मनुष्य के लिए या फिर परमेश्वर के लिए?

क्या देते वक्त तुम्हारी आंखें चारों तरफ घूमती हैं उन आंखों को गिनने के लिए जो उस वक्त तुम्हें देख रही हैं?

क्या तुम देने से पहले ज्यादा भीड़ का इंतजार कर रहे हो कि ज्यादा लोग तुम्हें देखें?

या फिर इसलिए नहीं लोगों की मदद कर पा रहे हो कि कोई है ही नहीं तुम्हारे काम को देखने को?

बाइबल में हम ये भी देखते हैं कि धर्म के काम तो हनान्या और साफिरा ने भी किए थे पर क्या वो परमेश्वर की महिमा के लिए थे? (प्रेरित 5:1-11)

नहीं। उन्होंने इसलिए दिया क्योंकि उन्होंने देखा कि बाकी विश्वासी अपना सब कुछ दे रहे थे (प्रेरित 4:32-37) तो फिर उन्होंने भी दिया पर लोगो को दिखाने के लिए कि हम भी धर्मी हैं पर परमेश्वर जो सब कुछ जानते हैं उनके काम को नहीं पर उनके मन के हिसाब से उन्हें प्रतिफल दिया।

इसलिए समझो कि परमेश्वर का वचन हमें आह्वान कर रहा है कि अपने आप को जांचो ।

क्या परमेश्वर मनुष्य के अंदर के विचारों से वाकिफ नहीं (यिरमियाह 17:9)

हमें सचेत होने की आवश्यकता है यह एक ऐसा छिपा हुआ पाप है जो अपनी ही व्यर्थ की महिमा खोजता है और परमेश्वर के जो सब आदर, जलाल और महिमा के वाकई हकदार है से चुराने में अग्रसर है।

इसलिए येशु अपने सुनने वालों को जब वे मनुष्य को दिखाने के लिए धार्मिकता के काम कर रहे थे तब उनको दिखावे के लिए काम करने के लिए फटकार लगाई।

मुझे आशा है कि परमेश्वर के वचनों से आप खुद को जांच पाए होंगे और पाया होगा कि वास्तविकता में हम स्वार्थी और अपनी महिमा के लिए ही जीने वाले हैं। आइये हम अंगीकार करें कि हां प्रभु मेरी

दशा ये ही है और मैं खुद को दिखाने के लिए ही करता हूँ पर मैं आपके लिए करना चाहता हूँ, मेरी मदद कीजिए कि मैं आपके लिए जियूँ और आपके वचनों के अनुसार मेरा जीवन हो।

यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी हैं। (भज। 32:5, नीति। 28:13)

(1 यूहन्ना 1:9)

Chapter 5: Doctrine of Unconditional Election बिना शर्त चुनाव की शिक्षा/सिद्धांतः

परमेश्वर ही ने कुछ लोगों को बिना किसी शर्त के अनंत में अर्थात् इस दुनिया को बनाने से पहले उद्धार के लिए चुन लिया था. उसने हमको इसलिए नहीं चुना की हम में कोई भलाई थी ना ही इसलिए की उसने भविष्य में ये देख लिया की हम उस को चुनेंगे. उसने हमें इस लिए चुना क्योंकि उसे मालूम था की हम पापों में मरे उसके दुश्मन उसको वैसे ही ग्रहण नहीं कर सकते जैसे कोई दक्षिण अफ्रीका का आदमी अपना रंग नहीं बदल सकता और जैसे की एक तेंदुआ अपने धब्बे नहीं बदल सकता. (Jer 13:23) उसने हम पर अनंत में दया की और हम को अपना बनाने के लिए चुन लिया. इस शिक्षा या सिद्धांत को हम बाइबल की हर किताब में बहुतायात और स्पष्टता के साथ देख सकते हैं. उनमे से कुछ साक्षी आयतें (prooftexts) हम नीचे दे रहे हैं.

Ps 65:4

Blessed is the one you choose and bring near, to dwell in your courts! We shall be satisfied with the goodness of your house, the holiness of your temple!

क्या ही धन्य है वह; जिस को तू चुनकर अपने समीप आने देता है, कि वह तेरे आंगनों में बास करे! हम तेरे भवन के, अर्थात् तेरे पवित्र मन्दिर के उत्तम उत्तम पदार्थों से तृप्त होंगे॥

Mt 11:25-30

*At that time Jesus declared, "I thank you, Father, Lord of heaven and earth, that **you have hidden these things from the wise and understanding and revealed them to little children**; 26 yes, Father, for **such was your gracious will**. 27 All things have been handed over to me by my Father, and no one knows the Son except the Father, and **no one knows the Father except the Son and anyone to whom the Son chooses to reveal him**. 28 Come to me, all who labor and are heavy laden, and I will give you rest. 29 Take my yoke upon you, and learn from me, for I am gentle and lowly in heart, and you will find rest for your souls. 30 For my yoke is easy, and my burden is light."*

उस अवसर पर यीशु बोला, "परम पिता, तू स्वर्ग और धरती का स्वामी है, मैं तेरी स्तुति करता हूँ क्योंकि तूने इन बातों को, उनसे जो ज्ञानी हैं और समझदार हैं, छिपा कर रखा है। और जो भोले भाले हैं उनके लिए प्रकट किया है।

हाँ परम पिता यह इसलिये हुआ, क्योंकि तूने इसे ही ठीक जाना।

“मेरे परम पिता ने सब कुछ मुझे सौंप दिया और वास्तव में परम पिता के अलावा कोई भी पुत्र को नहीं जानता। और कोई भी पुत्र के अलावा परम पिता को नहीं जानता। और हर वह व्यक्ति परम पिता को जानता है, जिसके लिये पुत्र ने उसे प्रकट करना चाहा है।

“हे थके-माँदे, बोझ से दबे लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें सुख चैन दूँगा।

लो और उसे अपने ऊपर सँभालो। फिर मुझसे सीखो क्योंकि मैं सरल हूँ और मेरा मन कोमल है। तुम्हें भी अपने लिये सुख-चैन मिलेगा।

क्योंकि वह जुआ जो मैं तुम्हें दे रहा हूँ बहुत सरल है। और वह बोझ जो मैं तुम पर डाल रहा हूँ, हल्का है।”

Mt 22:14

For many are called, but few are chosen.

“क्योंकि बुलाये तो बहुत गये हैं पर चुने हुए थोड़े से हैं।”

Jn 6:37

All that the Father gives me will come to me, and whoever comes to me I will never cast out.

जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, उसे मैं कभी न निकालूँगा।

Jn 13:18

I am not speaking of all of you; I know whom I have chosen. But the Scripture will be fulfilled, ‘He who ate my bread has lifted his heel against me.’[3]

मैं तुम सब के विषय में नहीं कहता: जिन्हें मैं ने चुन लिया है, उन्हें मैं जानता हूँ: परन्तु यह इसलिये है, कि पवित्र शास्त्र का यह वचन पूरा हो, कि जो मेरी रोटी खाता है, उस ने मुझ पर लात उठाई।

Jn 15:16

You did not choose me, but I chose you and appointed you that you should go and bear fruit and that your fruit should abide, so that whatever you ask the Father in my name, he may give it to you.

तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है और तुम्हें ठहराया ताकि तुम जाकर फल लाओ; और तुम्हारा फल बना रहे, कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से माँगो, वह तुम्हें दे।

Acts 2:39

For the promise is for you and for your children and for all who are far off, everyone whom the Lord our God calls to himself.”

क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर दूर के लोगों के लिये भी है जिन को प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।

Acts 2:47

praising God and having favor with all the people. And the Lord added to their number day by day those who were being saved.

और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उन से प्रसन्न थे: और जो उद्धार पाते थे, उन को प्रभु प्रति दिन उन में मिला देता था॥

Acts 13:46-48

*And Paul and Barnabas spoke out boldly, saying, "It was necessary that the word of God be spoken first to you. Since you thrust it aside and judge yourselves unworthy of eternal life, behold, we are turning to the Gentiles. 47 For so the Lord has commanded us, saying, "I have made you a **light for the Gentiles**, that you may bring **salvation to the ends of the earth.**" 48 And when the Gentiles heard this, they began rejoicing and glorifying the word of the Lord, and **as many as were appointed to eternal life believed.***

परन्तु यहूदी भीड़ को देख कर डाह से भर गए, और निन्दा करते हुए पौलुस की बातों के विरोध में बोलने लगे। तब पौलुस और बरनबास ने निडर होकर कहा, अवश्य था, कि परमेश्वर का वचन पहिले तुम्हें सुनाया जाता: परन्तु जब कि तुम उसे दूर करते हो, और अपने को अनन्त जीवन के योग्य नहीं ठहराते, तो देखो, हम अन्यजातियों की ओर फिरते हैं। क्योंकि प्रभु ने हमें यह आज्ञा दी है; कि मैंने तुझे अन्याजातियों के लिये ज्योति ठहराया है; ताकि तू पृथ्वी की छोर तक उद्धार का द्वार हो।

Rom 8:29-30

*For those whom he **foreknew** he also **predestined** to be conformed to the image of his Son, in order that he might be the firstborn among many brothers. 30 And those whom he **predestined** he also **called**, and those whom he called he also **justified**, and those whom he justified he also **glorified.***

क्योंकि जिन्हें उस ने पहिले से जान लिया है उन्हें पहिले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे। फिर जिन्हें उस ने पहिले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी, और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया है, और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है॥

Rom 11:5-7

*So too at the present time there **is a remnant, chosen by grace.** 6 But if it is by grace, it is no longer on the basis of works; otherwise grace would no longer be grace. 7 What then? Israel failed to obtain what it was seeking. The **elect obtained it, but the rest were hardened,***

सो इसी रीति से इस समय भी, अनुग्रह से चुने हुए कितने लोग बाकी हैं। यदि यह अनुग्रह से हुआ है, तो फिर कर्मों से नहीं, नहीं तो अनुग्रह फिर अनुग्रह नहीं रहा। सो परिणाम क्या हुआ यह? कि इस्त्राएली जिस की खोज में हैं, वह उन को नहीं मिला; परन्तु चुने हुआओं को मिला और शेष लोग कठोर किए गए हैं।

Eph 1:3-6

*Blessed be the God and **Father** of our Lord **Jesus** Christ, who has blessed us in Christ with every spiritual blessing in the heavenly places, 4 even as he **chose us in him before the foundation of the world**, that we should be **holy and blameless** before him. **In love** 5 he **predestined us for adoption as sons through Jesus Christ**, according to the **purpose of his will**, 6 to the **praise of his glorious grace**, with which he has blessed us in the Beloved.*

हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उस ने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है। जैसा उस ने हमें जगत की उत्पत्ति से पहिले उस में चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिये पहिले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों, कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उस ने हमें उस प्यारे में सेंट मेंट दिया।

Eph 1:11-12

*In him we have obtained an inheritance, having been **predestined according to the purpose of him who works all things according to the counsel of his will**, 12 so that we who were the first to hope in Christ might be to the praise of his glory.*

उसी में जिस में हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहिले से ठहराए जाकर मीरास बने। कि हम जिन्होंने पहिले से मसीह पर आशा रखी थी, उस की महिमा की स्तुति के कारण हों।

Eph 2:10

*For we are his **workmanship, created in Christ Jesus for good works, which God prepared beforehand**, that we should walk in them.*

क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिये तैयार किया ॥

Phil 2:12-13

*Therefore, my beloved, as you have always obeyed, so now, not only as in my presence but much more in my absence, **work out your own salvation with fear and trembling**, for 13 it is **God who works in you, both to will and to work for his good pleasure**.*

सो हे मेरे प्यारो, जिस प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते आए हो, वैसे ही अब भी न केवल मेरे साथ रहते हुए पर विशेष करके अब मेरे दूर रहने पर भी डरते और कांपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ। क्योंकि परमेश्वर ही है, जिस न अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है।

1Thess 1:4-5

*For we know, brothers loved by God, that **he has chosen you**, 5 because our gospel came to you not only in word, but also in power and in the Holy Spirit and with full conviction. You know what kind of men we proved to be among you for your sake.*

4. और हे भाइयो, परमेश्वर के प्रिय लोगों हम जानते हैं, कि तुम चुने हुए हो।

5. क्योंकि हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल वचन मात्र ही में वरन सामर्थ और पवित्र आत्मा, और बड़े निश्चय के साथ पहुंचा है; जैसा तुम जानते हो, कि हम तुम्हारे लिये तुम में कैसे बन गए थे।

1Thess 5:9-10

*For God has **not destined us for wrath**, but to **obtain salvation through our Lord Jesus Christ**, 10 who **died for us** so that whether we are awake or asleep **we might live with him**.*

क्योंकि परमेश्वर ने हमें क्रोध के लिये नहीं, परन्तु इसलिये ठहराया कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करें। वह हमारे लिये इस कारण मरा, कि हम चाहे जागते हों, चाहे सोते हों: सब मिलकर उसी के साथ जीएं।

2Thess 2:13-14

*But we ought always to give thanks to God for you, brothers beloved by the Lord, because **God chose you as the firstfruits to be saved**, through sanctification by the Spirit and belief in the truth. 14 To this **he called you through our gospel**, so that you may obtain the glory of our Lord Jesus Christ.*

प्रभु में प्रिय भाईयों, तुम्हारे लिए हमें सदा परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए क्योंकि परमेश्वर ने आत्मा के द्वारा तुम्हें पवित्र करके और सत्य में तुम्हारे विश्वास के कारण उद्धार पाने के लिए तुम्हें चुना है। जिन व्यक्तियों का उद्धार होना है, तुम उस पहली फसल के एक हिस्से हो।

और इसी उद्धार के लिए जिस सुसमाचार का हमने तुम्हें उपदेश दिया है उसके द्वारा परमेश्वर ने तुम्हें बुलाया ताकि तुम भी हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा को धारण कर सको।

1Pet 1:1-2

*Peter, an apostle of Jesus Christ, **To those who are elect** exiles of the Dispersion in Pontus, Galatia, Cappadocia, Asia, and Bithynia, 2 according to the **foreknowledge of God the Father**, in the **sanctification of the Spirit**, for **obedience to Jesus Christ and for sprinkling with his blood**: May grace and peace be multiplied to you.*

पतरस की ओर से जो यीशु मसीह का प्रेरित हैं, उन परदेशियों के नाम, जो पुन्तुस, गलतिया, कप्पदु किया, आसिया, और बिथुनिया में तितर बितर होकर रहते हैं। और परमेश्वर पिता के भविष्य ज्ञान के अनुसार, आत्मा के पवित्र करने के द्वारा आज्ञा मानने, और यीशु मसीह के लोहू के छिड़के जाने के लिये चुने गए हैं। तुम्हें अत्यन्त अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे॥

Isa 43:6-7

*I will say to the north, Give up, and to the south, Do not withhold; **bring my sons from afar and my daughters from the end of the earth**, 7 **everyone who is called by my name, whom I created for my glory, whom I formed and made.**"*

मैं उत्तर से कहूंगा, दे दे, और दक्खिन से कि रोक मत रख; मेरे पुत्रों को दूर से और मेरी पुत्रियों को पृथ्वी की छोर से ले आओ; हर एक को जो मेरा कहलाता है, जिस को मैं ने अपनी महिमा के लिये सृजा, जिस को मैं ने रचा और बनाया है॥

Rom 9:22-24

*What if God, desiring to **show his wrath and to make known his power**, has endured with much patience **vessels of wrath prepared for destruction**, 23 in order to make known the **riches of his glory for vessels of mercy**, which he has **prepared beforehand for glory**— 24 even us whom he has called, not from the Jews only but also from the Gentiles?*

किन्तु इसमें क्या है यदि परमेश्वर ने अपना क्रोध दिखाने और अपनी शक्ति जताने के लिए उन लोगों की, जो क्रोध के पात्र थे और जिनका विनाश होने को था, बड़े धीरज के साथ सही, उसने उनकी सही ताकि वह उन लोगों के लाभ के लिए जो दया के पात्र थे और जिन्हें उसने अपनी महिमा पाने के लिए बनाया था, उन पर अपनी महिमा प्रकट कर सके। अर्थात् हम जिन्हें उसने न केवल यहूदियों में से बुलाया बल्कि गैर यहूदियों में से भी

Eph 2:4-7

*But God, being **rich in mercy**, because of the **great love with which he loved us**, 5 even when we were **dead in our trespasses, made us alive together with Christ— by grace you have been saved—**6 and raised us up with him and seated us with him in the heavenly places in Christ Jesus, 7 so that in the coming ages **he might show the immeasurable riches of his grace in kindness toward us in Christ Jesus**. परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिस से उस ने हम से प्रेम किया। जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया; (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है।) और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया। कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है, आने वाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए।*

2Tim 1:8-12

*Therefore do not be ashamed of the testimony about our Lord, nor of me his prisoner, but share in suffering for the gospel by the power of God, 9 who **saved us and called us to a holy calling, not because of our works but because of his own purpose and grace, which he gave us in Christ Jesus before the ages began**, 10 and which now has been manifested through the appearing of our Savior Christ Jesus, who abolished death and brought life and immortality to light through the gospel, 11 for which I was appointed a preacher and apostle and teacher, 12 which is why I suffer as I do. But I am not ashamed, for I know whom I have believed, and I am convinced that he is able to guard until that Day what has been entrusted to me.*

इसलिये हमारे प्रभु की गवाही से, और मुझ से जो उसका कैदी हूं, लज्जित न हो, पर उस परमेश्वर की सामर्थ के अनुसार सुसमाचार के लिये मेरे साथ दुख उठा। जिस ने हमारा उद्धार किया, और पवित्र बुलाहट से बुलाया, और यह हमारे कामों के अनुसार नहीं; पर अपनी मनसा और उस अनुग्रह के अनुसार है जो मसीह यीशु में सनातन से हम पर हुआ है। पर अब हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु के प्रगट होने के द्वारा प्रकाश हुआ, जिस ने मृत्यु का नाश किया, और जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया। जिस के लिये मैं प्रचारक, और प्रेरित, और उपदेशक भी ठहरा। इस कारण मैं इन दुखों को भी उठाता हूं, पर लजाता नहीं, क्योंकि मैं उसे जिस की मैं ने प्रतीति की है, जानता हूं; और मुझे निश्चय है, कि वह मेरी थाती की उस दिन तक रखवाली कर सकता है।

Jn 1:11-13

*He came to his own, and his own people did not receive him. 12 But to all who did receive him, who believed in his name, he gave the right to become **children of God**, 13 who were born, not of blood nor of the **will of the flesh** nor of the will of man, but **of God**.*

वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया। परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। वे न तो लोहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।

Rom 9:15-16

*For he says to Moses, "**I will have mercy on whom I have mercy, and I will have compassion on whom I have compassion.**" 16 So then it depends not on **human will** or exertion, but on **God, who has mercy**.*

क्योंकि वह मूसा से कहता है, मैं जिस किसी पर दया करना चाहूं, उस पर दया करूंगा, और जिस किसी पर कृपा करना चाहूं उसी पर कृपा करूंगा। सो यह न तो चाहने वाले की, न दौड़ने वाले की परन्तु दया करने वाले परमेश्वर की बात है।

1Cor 1:30-31

*And **because of him you are in Christ Jesus**, who became to us wisdom from God, righteousness and sanctification and redemption, 31 so that, as it is written, "Let the one who boasts, boast in the Lord."*

परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा अर्थात् धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा। ताकि जैसा लिखा है, वैसा ही हो, कि जो घमण्ड करे वह प्रभु में घमण्ड करे॥

Jas 1:18

Of his own will he brought us forth by the word of truth, that we should be a kind of firstfruits of his creatures.

उस ने अपनी ही इच्छा से हमें सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया, ताकि हम उस की सृष्टि की हुई वस्तुओं में से एक प्रकार के प्रथम फल हों॥

Jer 1:5

“Before I formed you in the womb I knew you, and before you were born I consecrated you; I appointed you a prophet to the nations.”

गर्भ में रचने से पहिले ही मैं ने तुझ पर चित्त लगाया, और उत्पन्न होने से पहिले ही मैं ने तुझे अभिषेक किया; मैं ने तुझे जातियों का भविष्यद्वक्ता ठहराया।

Rom 9:10-13

*And not only so, but also when Rebekah had conceived children by one man, our forefather Isaac, 11 though they were not yet born and had done nothing either good or bad—in order that **God’s purpose of election** might continue, **not because of works** but because of **him who calls**— 12 she was told, “The older will serve the younger.” 13 As it is written, “**Jacob I loved, but Esau I hated.**”[4]*

और केवल यही नहीं, परन्तु जब रिबका भी एक से अर्थात् हमारे पिता इसहाक से गर्भवती थी। और अभी तक न तो बालक जन्मे थे, और न उन्होंने कुछ भला या बुरा किया था कि उस ने कहा, कि जेठा छुटके का दास होगा। इसलिये कि परमेश्वर की मनसा जो उसके चुन लेने के अनुसार है, कर्मों के कारण नहीं, परन्तु बुलाने वाले पर बनी रहे। जैसा लिखा है, कि मैं ने याकूब से प्रेम किया, परन्तु एसौ को अप्रिय जाना॥

Rom 10:20

*Then Isaiah is so bold as to say, “I have been **found by those who did not seek me**; I have **shown myself to those who did not ask for me.**”[5]”*

फिर यशायाह बड़े हियाव के साथ कहता है, कि जो मुझे नहीं ढूँढते थे, उन्होंने मुझे पा लिया: और जो मुझे पूछते भी न थे, उन पर मैं प्रगट हो गया।

1Cor 1:27-29

*But **God chose what is foolish** in the world to shame the wise; **God chose what is weak** in the world to shame the strong; 28 **God chose what is low** and despised in the world, even things that are not, to bring to nothing things that are, 29 so that **no human being might boast** in the presence of God.*

परन्तु परमेश्वर ने जगत के मूर्खों को चुन लिया है, कि ज्ञान वालों को लज्जित करे; और परमेश्वर ने जगत के निर्बलों को चुन लिया है, कि बलवानों को लज्जित करे। और परमेश्वर ने जगत के नीचों और तुच्छों को, वरन जो हैं भी नहीं उन को भी चुन लिया, कि उन्हें जो हैं, व्यर्थ ठहराए। ताकि कोई प्राणी परमेश्वर के साम्हने घमण्ड न करने पाए।

Acts 5:31

*God exalted him at his right hand as Leader and Savior, to give **repentance to Israel and forgiveness of sins.***

उसी को परमेश्वर ने प्रभु और उद्धारक ठहराकर, अपने दिहने हाथ से सर्वोच्च कर दिया, कि वह इस्त्राएलियोंको मन फिराव की शक्ति और पापोंकी झमा प्रदान करे।

Acts 11:18

*When they heard these things they fell silent. And they glorified God, saying, "Then to the Gentiles also **God has granted repentance that leads to life.**"*

यह सुनकर, वे चुप रहे, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, तक तो परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिये मन फिराव का दान दिया है।

Acts 15:8-9

*And God, who knows the heart, bore witness to them, by **giving them the Holy Spirit** just as he did to us, 9 and he made no distinction between us and them, having **cleansed their hearts by faith.***

तब पतरस ने बहुत वाद-

विवाद के बाद खड़े होकर उन से कहा॥ हे भाइयो, तुम जानते हो, कि बहुत दिन हुए, कि परमेश्वर ने तुम में से मुझे चुन लिया, कि मेरे मुंह से अन्यजाति सुसमाचार का वचन सुनकर विश्वास करें। और मन के जांचने वाले परमेश्वर ने उन को भी हमारी नाई पवित्र आत्मा देकर उन की गवाही दी।

Acts 16:14

*One who heard us was a woman named Lydia, from the city of Thyatira, a seller of purple goods, who was a worshiper of God. The **Lord opened her heart** to pay attention to what was said by Paul.*

सब्त के दिन हम नगर के फाटक के बाहर नदी के किनारे यह समझकर गए, कि वहां प्रार्थना करने का स्थान होगा; और बैठकर उन स्त्रियों से जो इकट्ठी हुई थीं, बातें करने लगे।

Acts 18:27-28

*And when he wished to cross to Achaia, the brothers encouraged him and wrote to the disciples to welcome him. When he arrived, he greatly helped **those who through grace had believed**, 28 for he powerfully refuted the Jews in public, showing by the Scriptures that the Christ was Jesus.*

सो जब उसने अखाया को जाना चाहा तो भाइयों ने उसका साहस बढ़ाया और वहाँ के अनुयायियों को उसका स्वागत करने को लिख भेजा। जब वह वहाँ पहुँचा तो उनके लिये बड़ा सहायक सिद्ध हुआ जिन्होंने परमेश्वर के अनुग्रह से विश्वास ग्रहण कर लिया था।

क्योंकि शास्त्रों से यह प्रमाणित करते हुए कि यीशु ही मसीह है, उसने यहूदियों को जनता के बीच जोरदार शब्दों में बोलते हुए शास्त्रार्थ में पछाड़ा था।

1Cor 12:8-10

*For to one is given through the Spirit the utterance of wisdom, and to another the utterance of knowledge according to the same Spirit, 9 to another **faith by the same Spirit**, to another gifts of healing by the one Spirit, 10 to another the working of miracles, to another prophecy, to another the ability to distinguish between spirits, to another various kinds of tongues, to another the interpretation of tongues.*

क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें दी जाती हैं; और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें। और किसी को उसी आत्मा से विश्वास; और किसी को उसी एक आत्मा से चंगा करने का वरदान दिया जाता है। फिर किसी को सामर्थ्य के काम करने की शक्ति; और किसी को भविष्यद्वाणी की; और किसी को आत्माओं की परख, और किसी को अनेक प्रकार की भाषा; और किसी को भाषाओं का अर्थ बताना।

Eph 2:8-9

*For by **grace you have been saved through faith**. And **this is not your own doing**; it is the **gift of God**, 9 not a result of works, so that no one may boast. [6]*

क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।

Phil 1:29-30

*For it has been **granted to you** that for the sake of Christ you should not only **believe in him** but also suffer for his sake, 30 engaged in the same conflict that you saw I had and now hear that I still have.*

क्योंकि मसीह के कारण तुम पर यह अनुग्रह हुआ कि न केवल उस पर विश्वास करो पर उसके लिये दुख भी उठाओ। और तुम्हें वैसा ही परिश्रम करना है, जैसा तुम ने मुझे करते देखा है, और अब भी सुनते हो, कि मैं वैसा ही करता हूँ॥

2Tim 2:24-26

*And the Lord's servant must not be quarrelsome but kind to everyone, able to teach, patiently enduring evil, 25 correcting his opponents with gentleness. **God may perhaps grant them repentance** leading to a knowledge of the truth, 26 and they may come to their senses and escape from the **snare of the devil, after being captured by him to do his will.***

और प्रभु के दास को झगड़ालू होना न चाहिए, पर सब के साथ कोमल और शिक्षा में निपुण, और सहनशील हो। और विरोधियों को नम्रता से समझाए, क्या जाने परमेश्वर उन्हें मन फिराव का मन दे, कि वे

भी सत्य को पहिचानें। और इस के द्वारा उस की इच्छा पूरी करने के लिये सचेत होकर शैतान के फंदे से छूट जाएं॥

Heb 12:1-2

*Therefore, since we are surrounded by so great a cloud of witnesses, let us also lay aside every weight, and sin which clings so closely, and let us run with endurance the race that is set before us, 2 looking to **Jesus, the founder and perfecter of our faith**, who for the joy that was set before him endured the cross, despising the shame, and is seated at the right hand of the throne of God.*

इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकने वाली वस्तु, और उलझाने वाले पाप को दूर कर के, वह दौड़ जिस में हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें। और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें; जिस ने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा।

2Pet 1:1-2

Simeon Peter, a servant and apostle of Jesus Christ, To those who have obtained[7] a faith of equal standing with ours by the righteousness of our God and Savior Jesus Christ: 2 May grace and peace be multiplied to you in the knowledge of God and of Jesus our Lord.

शमौन पतरस की ओर से जो यीशु मसीह का दास और प्रेरित है, उन लोगों के नाम जिन्होंने हमारे परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की धार्मिकता से हमारा सा बहुमूल्य विश्वास प्राप्त किया है। परमेश्वर के और हमारे प्रभु यीशु की पहचान के द्वारा अनुग्रह और शान्ति तुम में बहुतायत से बढ़ती जाए।

John 10:27–28

“My sheep hear My voice, and I know them, and they follow Me; 28 and I give eternal life to them, and they will never perish; and no one will snatch them out of My hand.”

मेरी भेड़ें मेरी आवाज को जानती हैं, और मैं उन्हें जानता हूँ। वे मेरे पीछे चलती हैं और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ। उनका कभी नाश नहीं होगा। और न कोई उन्हें मुझसे छीन पायेगा।

but you do not believe because you are not among my sheep. john 10:26

किन्तु तुम लोग विश्वास नहीं करते। क्योंकि तुम मेरी भेड़ों में से नहीं हो।

Proverbs 16:4

The LORD has made everything for His purpose—even ...

यहोवा ने अपने उद्देश्य से हर किसी वस्तु को रचा है यहाँ तक कि दुष्ट को भी नाश के दिन के लिये।

Rom 11:4

4 But what is the divine response to him? "I have kept for Myself seven thousand men who have not bowed the knee to Baal."

किन्तु तब परमेश्वर ने उसे कैसे उत्तर दिया था, "मैंने अपने लिए सात हजार लोग बचा रखे हैं जिन्होंने बाल के आगे माथा नहीं टेका।"

1 Corinthians 1:27, 29, 31

"God chose what is foolish in the world to shame the wise . . . so that no human being might boast in the presence of God. . . . 'Let the one who boasts, boast in the Lord'"

परन्तु परमेश्वर ने जगत के मूर्खों को चुन लिया है, कि ज्ञान वालों को लज्जित करे; और परमेश्वर ने जगत के निर्बलों को चुन लिया है, कि बलवानों को लज्जित करे।

ताकि कोई प्राणी परमेश्वर के साम्हने घमण्ड न करने पाए।

ताकि जैसा लिखा है, वैसा ही हो, कि जो घमण्ड करे वह प्रभु में घमण्ड करे॥